Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Exam Code: 216304 **Paper Code: 4161**

Programme: Master of Arts (Hindi) Semester – IV

Course Title: आधुनिक हिन्दी काव्य: छायावादोत्तर काल

Course Code: MHIL-4261

Time Allowed: 3 Hours **Max Marks: 64**

आवश्यक निर्देश - प्रश्न पत्र पाँच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है । शेष चार भागों में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है (800 शब्दों में)।

(भाग – एक)

1. निर्देश-निम्नलिखित में से किन्हीं चार पद्यान्शों की सप्रसंग व्याख्या करें: (200 शब्दों में)

(I) द्वीप हैं हम ! यह नहीं है शाप। यह अपनी नियती है।
हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी की क्रोड में।
वह बृहत भूखंड से हम को मिलाती है।
और वह भूखंड अपना पितर है।
नदी तुम बहती चलो।
भूखंड से जो दाय हमको मिला है, मिलता रहा है,
माँजती, सस्कार देती चलो। यदि ऐसा कभी हो -

(II) कवि जो होंगे हों, जो कुछ करते हैं, करें,
प्रयोजन मेरा बस इतना है :
ये दोनों जो
सदा एक-दूसरे से तन कर रहते हैं,
कब, कैसे, किस आलोक-स्फुरण में
इन्हें मिला दूँ—
दोनों जो हैं बन्धु, सखा, चिर सहचर मेरे।

(III) वह रहस्यमय व्यक्ति
अब तक न पाई गई मेरी अभिव्यक्ति है,
पूर्ण अवस्था वह
निज-संभावनाओं, निहित प्रभावों, प्रतिभाओं की,
मेरे परिपूर्ण का आविर्भाव,
हृदय में रिस रहे ज्ञान का तनाव वह,
आत्मा की प्रतिभा।

(IV) अनखोजी निज-समृद्धि का वह परम-उत्कर्ष,
परम अभिव्यक्ति...
मैं उसका शिष्य हूँ
वह मेरी गुरु है,
गुरु है!!

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

तिलस्मी खोह में देखा था एक बार,
आख़िरी बार ही।
पर, वह जगत् ही गलियों में घूमता है प्रतिपल
वह फटेहाल रूप।

(V) वे हर अन्याय को चुपचाप सहते हैं
और पेट की आग से डरते हैं
जबकि मैं जानता हूँ कि 'इनकार से भरी हुई एक चीख़'
और 'एक समझदार चुप'
दोनों का मतलब एक है—
भविष्य गढ़ने में, 'चुप' और 'चीख़'
अपनी-अपनी जगह एक ही क़िस्म से
अपना-अपना फ़र्ज़ अदा करते हैं।

(VI) आज मैं तुम्हें वह सत्य बतलाता हूँ
जिसके आगे हर सच्चाई
छोटी है। इस दुनिया में
भूखे आदमी का सबसे बड़ा तर्क
रोटी है।
मगर तुम्हारी भूख और भाषा में
यदि सही दूरी नहीं है
तो तुम अपने-आपको आदमी मत कहो
क्योंकि पशुता—
सिर्फ़ पूँछ होने की मजबूरी नहीं है
वह आदमी को वहीं ले जाती है
जहाँ भूख
सबसे पहले भाषा को खाती है। (4X4=16)

(भाग – दो)

2. प्रयोगवदी कवि अज्ञेय की जीवन-दृष्टि पर विचार करें। (12)
3. अज्ञेय के काव्य के शिल्प पक्ष की समीक्षा करें। **(12)**

(भाग – तीन)

4. 'गजानन माधव मुक्तिबोध का काव्य फेंटेसी का काव्य है।' इस कथन की समीक्षा करें। (12)
5. 'अंधेरे में' कविता का प्रतिपाद्य सपष्ट करें। **(12)**

(भाग – चार)

6. धूमिल के काव्य में प्रतिपादित मानवीय मूल्यों की विवेचना करें। (12)
7. धूमिल का काव्य आज के व्यक्ति का बिम्ब प्रस्तुत करता है।' इस कथन की समीक्षा करें। **(12)**

(भाग – पाँच)

8. गजानन माधव मुक्तिबोध के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालें। (12)
[illegible] कवि अज्ञेय के काव्य की विवेचना करें। (12)

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Exam Code: 216304 **Paper Code: 4162**
(20)

Programme: Master of Arts (Hindi)
Semester-IV

Course Title: Adhunik Gadya Sahitya

Course Code: MHIL-4262

Time Allowed: 3 Hours **Max Marks: 64**

नोट : यह प्रश्न पत्र कुल पांच इकाइयों में विभाजित है। पहली इकाई के 6 गद्यांशों में से किन्हीं चार की सप्रसंग व्याख्या अनिवार्य है। प्रत्येक व्याख्या 200 शब्दों में/ 2 पृष्ठों में हो। प्रत्येक व्याख्या 4 अंक की होगी। शेष चार इकाइयों (दो, तीन, चार, पांच) में समानुपात से क्रमशः एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में/ 5 पृष्ठों में हो। सभी प्रत्र 12–12 अंकों के होंगे।

इकाई–एक

1) क) किसी भी युग में कोई भी वर्ग एकदम नए सिरे से साहित्य या संस्कृति की रचना नहीं करता। यह तब तक की संचित ज्ञान राशि से लाभ उठाकर, अपने दृष्टिकोण से उसका मूल्यांकन करके उसके स्वस्थ तत्वों के आधार पर ही नए साहित्य और संस्कृति का निर्माण करता है।

ख) और इतने में पूरब से हल्की उजास आती है और शहर के इस शोर भरे बियाबान में चक्की के स्वर के साथ चढ़ती उतरती गीति हलकिवसी सिहरन पैदा करती है। मोरे राम के भीजै मुकुटवा और अमचूर की तरह

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

विश्वविद्यालीय जीवन की नीरसता मैसूखा मन कुछ ज़रूर ऊपरी सतह पर ही सही भेगतनहीं तो कुछ नम ज़रूर ही हो जाता है और महीनों की उमड़ी घुमड़ी उदासी बरसने बरसने को आ जाती है।

ग) मैंने आपसे कहा है न, बसा ! सब के बस ! सब के सब...........सब के सब.............एक से! बिल्कुल एक से हैं आप लोग? अलग अलग मुखौटे, पर चेहरा?..........चेहरा सबका एक ही।

घ) इसलिए कि वह अपने को बिल्कुल बेसहारा समझता है। उसके मन में यह विश्वास बिठा दिया है तुमने कि सब कुछ होने पर भी उसके लिए जिंदगी में तुम्हारे सिवा कोई चारा, कोई उपाय नहीं है और ऐसा क्या इसलिए नहीं किया तुमने कि जिंदगी में और कुछ हासिल न हो, तो कम से कम यह नामुराद मोहरा तो हाथ में बना ही रहे?

च) खफ़ीफ़ा की अदालत की देहली लांघने का यह पहला मौका था। मैं मुद्दालेह की ओर से तहस, अतः मुझे जिरह करनी थी। मैं खड़ा तो हुआ, पर पांव कांप रहे थे, सिर चकरा रहा था। जान पड़ता था, कचहरी घूम रही है। सवात सूझते ही न थे। जज हँसा होगा। वकीलों को तो मजा आया होगा। पर मेरी आँखें क्या कुछ देख पाती थीं।

छ) यह कंठी नहीं टूट सकती। माता जी की प्रसादी है। इसका गूढार्थ में नहीं जानता। इसे न पहनूँ तो मेरा कोई अनिष्ट होगा, ऐसा मुझे नहीं जान पड़ता। पर जो माला मुझे माता जी ने प्रेमपूर्वक पहनाई, जिसे पहनाने में उन्होंने मेरा कल्याण माना, उसका बिना कारण मैं त्याग नहीं करूंगा। काल पाकर जीर्ण हो जाएगी और अपने आप टूट जायेगी तब दूसरी लेकर पहनने का मुझे शौक नहीं रहेगा। पर यह कंठी टूट न सकेगी।

$4 \times 4 = 16$

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

इकाई–दो

2) हिंदी निबंध की विकास यात्रा पर सारगर्भित लेख लिखें।

3) 'पगडंडियों का ज़माना आधुनिक युग का सटीक व्यंग्य है।' इस कथन को तर्कसंगत रूप से सिद्ध करें। 12×1=12

इकाई–तीन

4) हिंदी नाटक की विशेषताओं का सोदाहरण परिचय दें।

5) मोहन राकेश के 'आधे अधूरे' नाटक की भाषागत उपलब्धियों को स्पष्ट करें। 12×1=12

इकाई–चार

6) आत्मकथा का अभिप्राय, तत्व एवं प्रकारों का परिचय दें।

7) आत्मकथा के तत्वों के आधार पर 'मेरी आत्मकथा' का मूल्यांकन करें। 12×1=12

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

इकाई–पांच

8) गेहूं बनाम गुलाब' का प्रतिपाद्य लिखें।

9) आधे अधूरे' के संदर्भ में नाटक और रंगमंच का रिश्ता स्पष्ट करें।

12×1=12

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Exam Code: 216304 **Paper Code: 4163**
(20)

Programme: Master of Arts (Hindi)
Semester-IV

Course Title: Hindi Bhasha aur Devnagri Lipi

Course Code: MHIL-4263

Time Allowed: 3 Hours **Max Marks: 64**

नोटः– यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है। पहला भाग अनिवार्य है। शेष भागों क्रमशः दो, तीन, चार और पांच में से एक–एक प्रश्न करना अनिवार्य है। (800 शब्द)

भाग–एक

नोटः– निम्नलिखित प्रश्नों में से कोई चार प्रश्न करें। सभी प्रश्न 4 अंक के हैं। (200 शब्द)

प्रश्न 1. मागधी भाषा का परिचय दें।

प्रश्न 2. पाली भाषा का परिचय दें।

प्रश्न 3. वाच्य का स्वरुप निर्धारित करें।

प्रश्न 4. कारक की परिभाषा दें।

प्रश्न 5. वचन का परिचय दें।

प्रश्न 6. प्रत्यय का परिचय दें।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

भाग–दो

प्रश्न 1. हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का परिचय दें।

प्रश्न 2. शौरसैनी तथा अपभ्रंश भाषाओं का परिचय दें।

भाग–तीन

प्रश्न 3. जार्ज ग्रियर्सन के भाषा वर्गीकरण का वर्णन करें।

प्रश्न 4. हिंदी भाषा के विकास के बारे में सारगर्भित नोट लिखें।

भाग–चार

प्रश्न 5. हिंदी शब्द रचना समास का परिचय दें।

प्रश्न 6. हिंदी की बोलियों का संक्षिप्त परिचय दें।

भाग–पांच

प्रश्न 7. खरोष्ठी लिपि का परिचय दें।

प्रश्न 8. देवनागरी लिपि की विशेषताएं बताएं। 12*4=48

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

LIBRARY
KMV-II [N.S.B]
EVE1-21-05-2024

Exam Code: 216304 **Paper Code: 4164**
(20)

Programme: Master of Arts (Hindi)
Semester-IV

Course Title: Rajbhasha Prashikshan

Course Code: MHIL-4264

Time Allowed: 3 Hours **Max Marks: 64**

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 4 प्रश्नों का उत्तर दें। प्रत्येक प्रश्न के लिए निर्धारित अंक हैं 4। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दो पृष्ठों/200 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न का के लिए निर्धारित अंक 4 हैं।

ईकाई—एक

1. i. संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की आवश्यकता के समबन्ध में विचार करें।
   ii. प्रारूपण का परिचय एवं परिभाषा दीजिए।
   iii. वार्तानुवाद और आशु अनुवाद का अर्थ स्पष्ट करें।
   iv. भूमंडलीकरण में भाषा की भूमिका के विषय में अपने मत को स्पष्ट कीजिए।
   v. हिंदी भाषा के विकास में कंप्यूटर के महत्व से आवगत कराएं।
   vi. हिंदी के प्रचार—प्रसार में आर्य समाज की भूमिका से आवगत करवाएं।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

–इकाई दो, तीन, चार और पांच में से किसी एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है। उत्तर पांच पृष्ठों/800 शब्दों में दें।

ईकाई–दो

प्र.2. द्विभाषा नीति और त्रिभाषा सूत्र का परिचय दें।

प्र.3. आलेखन की परिभाषा दें और अच्छे आलेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

ईकाई–तीन

प्र.4. टिप्पण की परिभाषा दें और अच्छे टिप्पण की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

प्र.5. संक्षेपण के आवश्यक तत्वों का परिचय दें।

ईकाई–चार

प्र.6. अनुवाद के अर्थ को परिभाषित करें और अनुवाद के विविध प्रकारों का परिचय दीजिए।

प्र.7. अनुवाद की समस्याओं और चुनौतियों पर प्रकाश डालें।

ईकाई–पांच

प्र.8. मीडीया में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की व्यावहारिक स्थिति पर विचार कीजिए।

प्र.9. बैंकों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की स्थिति पर विचार कीजिए।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Exam Code: 216304 **Paper Code: 4165**
(20)

Programme: Master of Arts (Hindi)
Semester-IV

Course Title: Shodh Pravidhi

Course Code: MHIL-4265

Time Allowed: 3 Hours **Max Marks: 64**

निम्न सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं भाग–दो, तीन, चार, पाँच में से एक–एक प्रश्न का उत्तर 800 शब्दों में दें।

भाग–I

1. निम्न छः प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दें– (200शब्द)
क शोध के समानार्थक शब्दों को परिभाषित कीजिए।
ख शोध प्रबन्ध में भूमिका लेखन के महत्व को स्पष्ट करें।
ग पुस्तकालय शोध से क्या अभिप्रायः है?
घ सांस्कृतिक शोध का संक्षिप्त परिचय दें।
ङ प्रश्नोत्तरी निर्माण से क्या तात्पर्य है?
च शोध और समीक्षा के सम्बन्ध को स्पष्ट करें। 4x4=16

भाग–II

2. शोध की परिभाषा देते हुए शोधकार्य के विभिन्न चरणों को विवेचित करें।
अथवा
हिन्दी शोध में आने वाली समस्याओं और उसके निवारण की विस्तृत चर्चा करें। 12

भाग–III

3. साहित्यिक शोध के अन्तर्गत भाषावैज्ञानिक शोध और मनोवैज्ञानिक शोध का विस्तृत उल्लेख करें।
अथवा
साक्षात्कार के स्वरूप, प्रकार और विधियों का उल्लेख करें। 12

भाग–IV

4. शोध के विभिन्न प्रकारों का वर्णन करें
अथवा
डिजिटल युग में शोध की मौलिकता और परिवर्तन पर अपने तर्कसंगत विचार दें। 12

भाग–V

5. पाद टिप्पण के महत्व और विभिन्न प्रकार की सामग्री की प्रस्तुति को उदाहरण सहित व्याख्यायित करें।
अथवा
शोध में शीर्ष की करण, संदर्भिका तथा अनुक्रमलिका के महत्व को स्पष्ट करें। 12

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

For Gap Year Students 2022-23.

Exam Code: 216304 **Paper Code: 9414.**

Programme: Master of Arts (Hindi)
Semester-IV

Course Title: Utar Kavyadhara ke sandarbh mein Guru Tegh Bahadur Ji ki vani ka vishesh adhyayan

Course Code: MHIL-4265 (Opt-I)

Time Allowed: 3 Hours **Max Marks: 64**

नोटः यह प्रश्न पत्र कुल पांच इकाइयों में विभाजित है। पहली इकाई के 6 पद्यांशों में से किन्हीं चार की सप्रसंग व्याख्या अनिवार्य है। प्रत्येक व्याख्या 200 शब्दों/में हो। प्रत्येक व्याख्या 4 अंक की होगी। शेष चार इकाइयों (दो, तीन, चार, पांच) में समानुपात से क्रमशः एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800–शब्दों में हो। सभी प्रश्न 12–12 अंकों के होंगे।

इकाई–एक

1. निम्रांकित में से किन्हीं चार की सप्रसंग व्याख्या करें:–

क) साधो इह जग भरम भुलाना।।
राम नाम का सिमरन छोड़िया माया हाथ बिकाना।।
मात पिता भाई सुत बनिता ताके रस लपटाना।।
जोबन धन प्रभट के मन में अहिनिसि रहे दिवाना।।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

दीन दइआल सदा दुखभंजन ता सिउ मन न लगाना।।
जन नानक कोटिन में किनहु गुरमुखि होइ पछाना।।

ख) नर अचेत पाप ते हरु रे।।
दीन दश्यात सगत भै भंजन सरणि ताहि तुम परु रे।
वेद पुरान जासु गुन गावत ताको नाम ह्रदय में धरु रे।
पावन नाम जगत को हरि को सिमरि कसमल सभु हरु रे।।
मानस देह बहुरि नहि पावै कछु उपाई।। मुकति का करु रे।।
नानक कहत गाइ।। करुना में भव सागर के पारि उतरु रे।।

ग) चिंता ताकी कीजिये जो अनहोनी होइ।। इतु मारग संसार को नानक थिरु नहीं कोई।।

घ) जो उपजिओ सो बिनसि है, परो आजु के काल।।
नानक हरि गन गाई ले छाड सकल जंजाल ।।

च) संग सखा सभ तजि गए कोउ न निदाहिओ सापि।।
कनऊ नानक इहु बिपति में टेक एक रघुनाथ।।

छ) मन की मन माहि रही।।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

न हरि भजे न तीर्थ सेवे छोटी काल गही।।
दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सब मही।।
फिरत फिरत बहुते जुग हारियो मानस देह तही।।
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नहीं।।

$16\times1=16$

इकाई–दो

2) गुरु तेग बहादुर की वाणी की मूल संवेदना क्या है? विस्तृत एवं सोदाहरण परिचय दें।

3) गुरु तेग बहादुर जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दें।

इकाई–तीन

4) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में भारतीय संस्कृति का चित्रण हुआ है। इस कथन की पुष्टि करें।

5) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में आए।

पौराणिक संदर्भों की विस्तृत चर्चा करें।

$12\times1=12$

इकाई–चार

6) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी की प्रगतिशीलता पर अपने विचार प्रकट करें।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

7) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी का परवर्ती पंजाब के साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा,? स्पष्ट करें। 12×1=12

इकाई–पांच

8) हिंदी साहित्य में गुरु तेग बहादुर जी का स्थान निर्धारित करें।

9) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी का समाजशास्त्रीय अध्ययन करें।

12×1=12

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

Exam Code: 216304 **Paper Code: 4166**
(20)

Programme: Master of Arts (Hindi)
Semester-IV

Course Title: Utar Kavyadhara ke sandarbh mein Guru Tegh Bahadur Ji ki vani ka vishesh adhyayan

Course Code: MHIL-4266 (Opt-I)

Time Allowed: 3 Hours **Max Marks: 64**

नोटः यह प्रश्न पत्र कुल पांच इकाइयों में विभाजित है। पहली इकाई के 6 पद्यांशों में से किन्हीं चार की सप्रसंग व्याख्या अनिवार्य है। प्रत्येक व्याख्या 200 शब्दों/में हो। प्रत्येक व्याख्या 4 अंक की होगी। शेष चार इकाइयों (दो, तीन, चार, पांच) में समानुपात से क्रमशः एक–एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800–शब्दों में हो। सभी प्रश्न 12–12 अंकों के होंगे।

इकाई–एक

1. निम्रांकित में से किन्हीं चार की सप्रसंग व्याख्या करें:–

क) साधो इह जग भरम भुलाना।।
राम नाम का सिमरन छोड़िया माया हाथ बिकाना।।
मात पिता भाई सुत बनिता ताके रस लपटाना।।
जोबन धन प्रभट के मन में अहिनिसि रहे दिवाना।।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

दीन दइआल सदा दुखभंजन ता सिउ मन न लगाना।।
जन नानक कोटिन में किनहु गुरमुखि होइ पछाना।।

ख) नर अचेत पाप ते हरु रे।।
दीन दश्यात सगत भै भंजन सरणि ताहि तुम परु रे।
वेद पुरान जासु गुन गावत ताको नाम हृदय में धरु रे।
पावन नाम जगत को हरि को सिमरि कसमल सभु हरु रे।।
मानस देह बहुरि नहि पावै कछु उपाई।। मुकति का करु रे।।
नानक कहत गाइ।। करुना में भव सागर के पारि उतरु रे।।

ग) चिंता ताकी कीजिये जो अनहोनी होइ।। इतु मारग संसार
को नानक थिरु नहीं कोई।।

घ) जो उपजिओ सो बिनसि है, परो आजु के काल।।
नानक हरि गन गाई ले छाड सकल जंजाल ।।

च) संग सखा सभ तजि गए कोउ न निदाहिओ सापि।।
कनऊ नानक इहु बिपति में टेक एक रघुनाथ।।

छ) मन की मन माहि रही।।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

न हरि भजे न तीर्थ सेवे छोटी काल गही।।
दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सब मही।।
फिरत फिरत बहुते जुग हारियो मानस देह तही।।
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नहीं।।

16×1=16

इकाई–दो

2) गुरु तेग बहादुर की वाणी की मूल संवेदना क्या है? विस्तृत एवं सोदाहरण परिचय दें।

3) गुरु तेग बहादुर जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दें।

इकाई–तीन

4) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में भारतीय संस्कृति का चित्रण हुआ है। इस कथन की पुष्टि करें।

5) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में आए।

पौराणिक संदर्भों की विस्तृत चर्चा करें।

12×1=12

इकाई–चार

6) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी की प्रगतिशीलता पर अपने विचार प्रकट करें।

Digitized by KMV College Library, Jalandhar

7) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी का परवर्ती पंजाब के साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा,? स्पष्ट करें। 12×1=12

इकाई—पांच

8) हिंदी साहित्य में गुरु तेग बहादुर जी का स्थान निर्धारित करें।

9) गुरु तेग बहादुर जी की वाणी का समाजशास्त्रीय अध्ययन करें।

12×1=12